सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

मूल्य ₹ 3/-

● वर्षः 9 ● अंकः 07 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, बुधवार, 8 फरवरी, 2023

मछलियां पानी में रहती हैं, जैसे इंसान जमीन पर रहता है, बड़े वाले छोटे वालों को खा जाते हैं।
–विलियम शेक्सपीयर

ओपीएस के लिए किया गया बजट... 7 | राहुल के तेवरः मोदी पर और होंगे... 3 | शिवपाल से मिले अखिलेश, प्रदेश... 2

बजट सत्र के 8वें दिन भी छाया रहा 'हिंडनबर्ग' का मुद्दा

खरगे ने पूछा, ऐसा क्या जादू हुआ जो ढाई साल में 12 लाख करोड़ बढ़ गई संपत्ति

» भाजपा ने दिया राहुल गांधी के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस

» रविशंकर ने कहा, कांग्रेस नेता ने सदन को किया गुमराह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संसद के बजट सत्र के आज आठवें दिन भी हिंडनबर्ग की रिपोर्ट को लेकर दोनों सदनों में जबरदस्त हंगामा देखने को मिला। आप, बीआरएस, शिवसेना ने भी जेपीसी जांच की मांग को लेकर संसद के बाहर गांधी प्रतिमा के सामने प्रदर्शन किया। कल कांग्रेस सांसद राहुल गांधी द्वारा पीएम मोदी पर बोले गए जबरदस्त हमले और पूछे गए कड़े प्रश्नों पर आज लोकसभा में भाजपा द्वारा जबरदस्त हंगामा किया गया और बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने लोकसभा में राहुल गांधी के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिस दे दिया।

उन्होंने राहुल पर पीएम मोदी का अपमान करने का आरोप लगाया। वहीं बीजेपी नेता रविशंकर प्रसाद ने राहुल के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि कांग्रेस नेता ने बिना किसी सबूत के पीएम पर गंभीर आरोप लगाए। दूसरी ओर राज्यसभा में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी हिंडनबर्ग रिपोर्ट को लेकर ही भाजपा सरकार को घेरा। खरगे ने कहा सभी पार्टियां जेपीसी की मांग कर रही हैं। पीएम मोदी आज दोपहर साढ़े तीन बजे लोकसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई चर्चा का जवाब देंगे।

राहुल गांधी के भाषण को रिकॉर्डिंग से हटाया जाए

लोकसभा में संसदीय कार्य मंत्री प्रह्लाद जोशी ने स्पीकर से मांग की कि राहुल गांधी के भाषण को सदन के रिकॉर्ड से हटाया जाए, क्योंकि उसमें आधारहीन और अनर्गल आरोप लगाए गए हैं और उसके लिए कोई न तो सबूत दिए गए हैं और ना ही राहुल गांधी ने अपनी ओर से पेश किए गए किसी दस्तावेज को सत्यापित किया है।

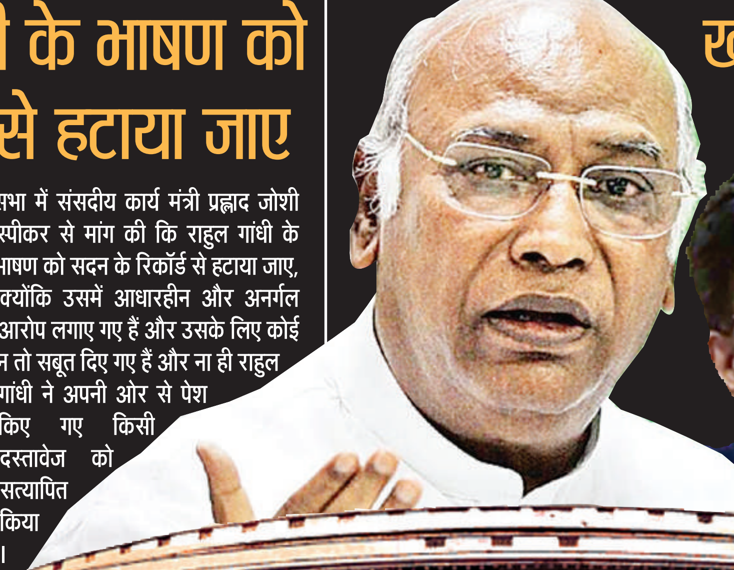

खरगे के आरोपों पर पीयूष गोयल का पलटवार

खरगे के आरोपों पर जवाब देते हुए केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि कांग्रेस विदेशी रिपोर्टों (हिंडनबर्ग रिपोर्ट) पर बात कर रही है। इनके खुद के नेता जिनके कहने के बगैर ये कुछ नहीं करते हैं उनकी संपत्ति ही देखें कि 2014 में इनके नेता की कितनी संपत्ति थी और आज कितनी है। अडानी मामले में जेपीसी की मांग को लेकर भी पीयूष गोयल ने पलटवार किया। गोयल ने कहा कि जेपीसी तब बैठती है जब आरोप सिद्ध हो जाए। जब सरकार पर आरोप लगता है तब संयुक्त संसदीय समिति बिठाई जाती है किसी निजी व्यक्ति के मुद्दे पर नहीं।

अडानी के नाम से बीजेपी को इतनी चिंता क्यों होती है : अधीर रंजन

कांग्रेस सांसद अधीर रंजन चौधरी ने कहा कि अडानी के नाम से बीजेपी को इतनी चिंता क्यों हो रही है। भारत में इतने उद्योगपति हैं, लेकिन बीजेपी अडानी के नाम से इतना लगाव क्यों महसूस कर रही है कि राहुल गांधी की तरफ से अडानी की आलोचना इन्हें अच्छी नहीं लग रही।

कुछ ही उद्योगपतियों को दिया जा रहा बढ़ावाः खरगे

राहुल गांधी के बाद आज राज्यसभा में कांग्रसे के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने भी राष्ट्पति के अभिभाषण पर चर्चा करते हुए अडानी के मुद्दे पर भाजपा को घेरते हुए जबरदस्त हमला बोला। खरगे ने कहा कि ऐसा क्या जादू हुआ कि ढाई साल में 12 लाख करोड़ संपत्ति बढ़ गई। राज्सभा में विपक्ष के नेता खगरे ने कहा कि एक व्यक्ति जिसकी संपत्ति ढाई साल में 13 गुना बढ़ गई। 2014 में 50,000 करोड़ की थी, वह 2019 में एक लाख करोड़ की हो गई। वहीं खरगे ने ये भी पूछा कि सिर्फ कुछ ही उद्योगपतियों को क्यों बढ़ाया जा रहा है? अडानी के मुद्दे पर जेपीसी की मांग करते हुए खरगे ने कहा कि सभी पार्टियां जेपीसी की मांग कर रही हैं। साथ ही खरगे ने हिंदू-मुस्लिम पर भी बात की। खरगे ने कहा कि अनुसूचित जाति को तो हम हिंदू समझते हैं न, तब उन्हें मंदिर जाने से क्यों रोकते हैं? अगर समझते हैं तो उन्हें बराबरी का स्थान क्यों नहीं देते। कई मंत्री दिखावे के लिए उनके घर जाकर खाना खाते हैं और तस्वीर खींचवा कर बताते हैं कि हमने उनके घर खाना खाया है। कांग्रेस ने कहा कि कई सासंद-मंत्री सिर्फ हिंदू मुस्लिम करते हैं, क्या बात करने के लिए कोई और मुद्दा नहीं है। खरगे के आडानी को लेकर लगाए गए आरोपों पर सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि आरोपों को लेकर सबूत पेश करें।

संजय सिंह ने दिया सस्पेंशन ऑफ बिजनेस नोटिस

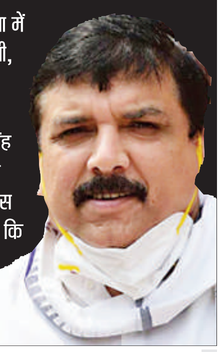

आप सांसद संजय सिंह ने नियम 267 के तहत राज्यसभा में सस्पेंशन ऑफ बिजनेस नोटिस दिया है। इसमें एलआईसी, एसबीआई आदि की होल्डिंग्स के ओवर-एक्सपोजर की कथित घटनाओं और कुछ फर्मों के खिलाफ बाजार में हेरफेर के आरोपों पर चर्चा की मांग की गई है। संजय सिंह के अलावा भारत राष्ट्र समिति के सांसद के. केशव राव ने राज्यसभा में नियम 267 के तहत सस्पेंशन ऑफ बिजनेस नोटिस दिया और इस पर चर्चा की मांग की। राव ने कहा कि यूएस-शॉर्ट सेलर की रिपोर्ट भारतीय लोगों और अर्थव्यवस्था के लिए खतरों को उजागर करती है और तत्काल चर्चा की योग्यता रखती है।

शिवपाल से मिले अखिलेश, प्रदेश संगठन पर मंथन

प्रदेश में सपा नए सिरे से शुरू करेगी आंदोलन

» नौ फरवरी को लोकसभा चुनाव के लिए गाजीपुर से भरेंगे हुंकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोकसभा चुनाव के लिए नौ फरवरी से पूर्वांचल के गाजीपुर से चुनावी शंखनाद करने से पहले मंगलवार को समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव चाचा शिवपाल सिंह यादव से मिलने उनके घर पहुंचे। सपा मुखिया वहां एक जनसभा को भी संबोधित करेंगे।

दोनों के बीच करीब 45 मिनट गुफ्तगू हुई। बताया जाता है कि दोनों ने प्रदेश के संगठनात्मक ढांचे पर चर्चा की। शिवपाल के साथियों को समायोजित करने की रणनीति बनाई गई। माना जा रहा है कि सपा प्रदेश में नए सिरे से आंदोलन शुरू करेगी। पार्टी से दूर हुए कई नेता घर वापसी करेंगे। सपा के राष्ट्रीय महासचिव बनने के बाद भी शिवपाल सिंह यादव अभी तक कार्यालय नहीं जाते हैं। वह पहले की तरह अपने पुराने कार्यालय में ही कार्यकर्ताओं से मुलाकात करते हैं। ऐसे में मंगलवार शाम अखिलेश यादव उनके घर पहुंचे। दोनों के बीच सियासी हालात पर चर्चा हुई। वे करीब 45 मिनट साथ-साथ रहे। इस दौरान प्रदेश कार्यकारिणी को लेकर मंथन हुआ। शिवपाल के साथ रहने वालों को मुख्य कार्यकरिणी के साथ ही विभिन्न फ्रंटल संगठनों में समायोजित करने पर चर्चा हुई। सूत्रों का कहना है कि शिवपाल सिंह यादव ने प्रगतिशील समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय एवं प्रदेश कार्यकारिणी में रहे कुछ लोगों को समायोजित करने पर जोर दिया है। पार्टी की सक्रियता के लिए नए सिरे से प्रदेश में आंदोलन शुरू करने की जरूरत बताई। पूर्वांचल सहित विभिन्न जिलों में भ्रमण के दौरान मिले फीडबैक से भी अखिलेश यादव को वाकिफ कराया। बताया कि हर जगह पार्टी के नए-पुराने कार्यकर्ता तैयार बैठे हैं। उन्हें सक्रिय करने की जरूरत है। ऐसे में माना जा रहा है कि प्रदेश में जल्द ही समाजवादी पार्टी जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं को सक्रिय करने की कवायद शुरू करेगी। विभिन्न मुद्दों पर जनांदोलन भी शुरू होगा। इसकी अगुवाई शिवपाल सिंह यादव करते दिखेंगे। सूत्रों का यह भी कहना है कि पार्टी के कई पुराने नेता छिटक चुके हैं। इसमें कुछ ने दूसरे दलों की सदस्यता ले ली है। इसमें ज्यादातर यादव नेता हैं। इन नेताओं को फिर से जोड़ने पर भी चर्चा हुई। सूत्रों का यह भी कहना है कि मार्च तक कई नेताओं की घर वापसी हो सकती है। इसकी कवायद शुरू कर दी गई है।

भाजपा सरकार में जनता पर पड़ रही महंगाई की मार

सपा प्रमुख ने कहा, बजट के साथ भाजपा की डबल इंजन सरकार ने जनता पर मंहगाई की मार पड़ना शुरू हो गई हैं। लोग त्राहि-त्राहि करने लगे हैं। लोग कैसे अपनी गृहस्थी चलाएं और कैसे जीवनयापन करें? ये सवाल अब सभी को परेशान कर रहा है। जनता को अब पूरा विश्वास हो चला है कि भाजपा सरकार पूंजीपतियों वाले घरानों की संरक्षक सरकार है। पूंजीपति मित्रों को लम्बे-लम्बे कर्ज देने वाली सरकार है। उससे देश की अर्थव्यवस्था भले ही बने या बिगड़े। पहले अमूल ने अपने दूध उत्पादों के दाम बढ़ाए। फिर पराग ने भी दाम बढ़ा दिए। इससे बच्चों के दूध में कटौती होगी।

हर साल बढ़ रहा रोडवेज का किराया

पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, रोडवेज बसों के साथ ही लखनऊ शहर में ऑटो का किराया भी बढ़ गया है। अब यात्रियों को प्रति किलोमीटर के लिए लगभग 10.58 रूपए किराया देना होगा। रोडवेज का किराया वर्ष 2012 से 2014 तक प्रतिवर्ष और फिर वर्ष 2016-2017 तथा 2020 और 2023 में बढ़ाया गया। इस तरह हर साल किराया बढ़ रहा। अखिलेश ने कहा, भाजपा सरकार का जो हाल में केन्द्रीय बजट पेश हुआ, उसमें मंहगाई रोकने का कोई उपाय नज़र नहीं आ रहा है। पेट्रोल-डीजल और रसोई गैस के दामों में कहीं कमी नहीं हुई। खाद्यान्न के दामों में बढ़ोतरी से आम जनता क्या खाए क्या बचाएं? जन-साधारण की चिंताओं और परेशानियों पर भाजपा सरकार ने आंख मूंद रखी है।

साधु-संतों पर एफआईआर और भागवत पर रासुका लगाएं योगी

» स्वामी प्रसाद मौर्य ने सीएम योगी को दी चुनौती

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। रामचरितमानस को लेकर राजनीतिक वितंडा खड़े करने वाले समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव स्वामी प्रसाद मौर्य ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को उन साधु संतों के विरुद्ध एफआइआर दर्ज कराने की चुनौती दी है जिन्होंने उनकी जीभ, नाक, सर और गला काटने के लिए ईनाम की घोषणा की थी। उन्होंने कहा कि योगी को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत के खिलाफ रासुका लगाना और मुकदमा दर्ज कराना चाहिए।

रामचरितमानस को लेकर उठे विवाद के बाद आरएसएस प्रमुख ने रविवार को मुंबई में कहा था कि ऊंच-नीच की श्रेणी भगवान ने नहीं, पंडितों ने बनाई। स्वामी प्रसाद ने कहा कि मैंने तो सिर्फ रामचरिमानस की कुछ पंक्तियों पर आपत्ति जताते हुए उन्हें हटाने की मांग की थी। मैंने तो यह बात सांविधानिक दायरे में रह कर की थी। मेरे खिलाफ एफआइआर इसलिए दर्ज करायी गई क्योंकि मैं पिछड़ा हूं जबकि मेरे अंग काटने की सुपारी देने वाले साधु संतों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने ट्वीट कर कहा था कि प्रधानमंत्री आप चुनाव के समय इन्हीं महिलाओं, आदिवासियों, दलितों, पिछड़ो को हिंदू कहते हैं। आरएसएस प्रमुख, भागवत जी कहते हैं कि जाति पंडितों ने बनाई। तो आखिर इन्हें नीच, अधम, प्रताड़ित, अपमानित करने वाली रामचरित्र मानस की आपत्तिजनक टिप्पड़ीयों को हटाने हेतु पहल क्यों नहीं। स्वामी प्रसाद ने ट्वीट कर यह भी कहा था कि जाति-व्यवस्था पंडितो (ब्राह्मणों) ने बनाई है, यह कहकर भागवत ने धर्म की आड़ में महिलाओं, आदिवासियों, दलितों व पिछड़ों को गाली देने वाले तथाकथित धर्म के ठेकेदारों व ढोंगियों की कलई खोल दी, कम से कम अब तो रामचरित्र मानस से आपत्तिजनक टिप्पड़ी हटाने के लिये आगे आयें।

कांग्रेस का इतिहास देश को ठगने का रहा: योगी

» रैली में बोले-कम्युनिस्टों के साथ मिलकर कांग्रेस आपकी सुरक्षा में सेंध लगाने आई है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अगरतला। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ मंगलवार को त्रिपुरा के विधानसभा के चुनावी समर में भी उतर गए। उन्होंने यहां दो विधानसभा क्षेत्र बागबासा और कल्याणपुर-प्रमोदनगर में विजय संकल्प रैली को संबोधित किया और एक क्षेत्र में रोड शो कर विकास कार्यों के बलबूते दूसरी बार त्रिपुरा में भाजपा सरकार बनाने की अपील की। अपनी चुनावी रैलियों में योगी ने कांग्रेस नेता राहुल गांधी पर पलटवार करते हुए कहा कि कांग्रेस का इतिहास देश को ठगने का रहा है।

कम्युनिस्टों के साथ मिलकर कांग्रेस आपकी सुरक्षा में सेंध लगाने आई हैं। बागबासा में भाजपा प्रत्याशी जादब लाल नाथ के पक्ष में योगी आदित्यनाथ ने पहली जनसभा की। यहां उनके साथ त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा भी मौजूद थे। सीएम योगी आदित्यनाथ ने कहा कि डबल इंजन की सरकार ने पांच वर्ष में त्रिपुरा को अलग पहचान दिलाई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मूल मंत्र सबका साथ, सबका विकास का वास्तविक रूप त्रिपुरा में धरातल पर दिख रहा है। खोवाई जिले के कल्याणपुर-प्रमोदनगर विधानसभा क्षेत्र में दूसरी रैली को संबोधित करते हुए योगी आदित्यनाथ ने यहां भाजपा उम्मीदवार पिनाकी दास चौधरी के पक्ष में वोट मांगे। उन्होंने कहा कि 2018 में भाजपा ने त्रिपुरा की खुशहाली व समग्र विकास के लिए समर्थन मांगा था। 35 वर्ष तक कम्युनिस्ट व कांग्रेस के नेताओं ने विकास नहीं होने दिया। विकास योजनाओं में डकैती डाली।

कांग्रेस ने किया हमेशा राम मंदिर का विरोध : मुख्यमंत्री

इसी कड़ी में उन्होंने केंद्र सरकार की योजनाओं के अंतर्गत त्रिपुरावासियों को मिले लाभों का उल्लेख किया। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कम्युनिस्टों का कुशासन और कांग्रेस मिलकर चुनाव लड़ रहे हैं। कुशासन को कई गुना बढ़ाने व अराजकता फैलाने के लिए दोनों पार्टियां फिर से मैदान में हैं। कांग्रेस ने किसी भी तबके तक शासन की योजनाओं का लाभ नहीं पहुंचने दिया। कम्युनिस्टों व कांग्रेस ने विभाजन किया। जिस राम मंदिर का कांग्रेस विरोध करती थी, उसका निर्माण कार्य अंतिम चरणों में है।

राहुल गांधी की टिप्पणी ओछी और निंदनीय : भूपेंद्र चौधरी

» संगठन व सरकार ने कहा-माफी मांगे कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष व सांसद राहुल गांधी के बयान पर भारतीय जनता पार्टी ने कड़ी आपत्ति जताई। सभी ने एक स्वर में कहा कि अपने बयान पर राहुल गांधी माफी मांगे। वे जनभावनाओं का सम्मान करना सीखें।

भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने कहा कि प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने कानून का राज स्थापित किया है। विकास के कार्य हो रहे हैं, राहुल गांधी का यह बयान उनकी राजनैतिक अपरिपक्वता को दर्शाता है। राहुल गांधी सपने में हैं, यूपी आए नहीं, उन्हें एक्सप्रेस-वे व विकास की जानकारी नहीं है। गोरक्षपीठाधीश्वर और सीएम योगी पर राहुल गांधी की टिप्पणी ओछी और निंदनीय है, जो यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि उन्हें न इतिहास पता और न ही वर्तमान ज्ञान है। राहुल गांधी को समझना चाहिए कि धर्म में कोई नेतागिरी नहीं होती। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि योगी के लिए किसी सम्प्रदाय, जाति, वर्ग का भेद नहीं है। राहुल गांधी को गोरक्षपीठ का इतिहास और वर्तमान भी जान लेना चाहिए।

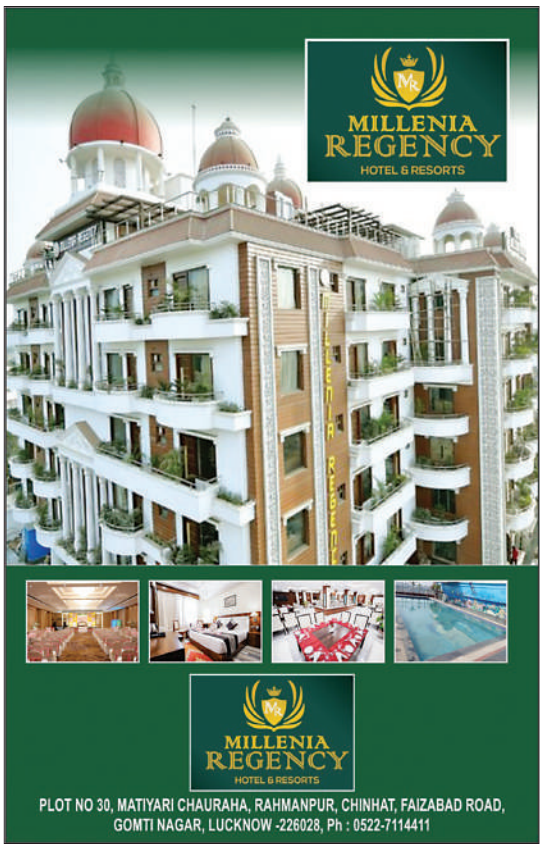

राहुल के तेवर : मोदी पर और होंगे हमलावर

भारत जोड़ो यात्रा का मिल सकता है कांग्रेस को लाभ

» बीजेपी के लिए आसान नहीं होगी 2024 की राह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत जोड़ो यात्रा के बाद राहुल गांधी पूरे फार्म में आ गए हैं। संसद में जिस तरह उन्होंने मोदी सरकार पर हमला बोला है उससे तो लगता है कि आने वाले चुनाव तक वह संसद से सड़क तक मोदी व उनकी सरकार पर हमले का कोई भी मौका छोड़ेंगे नहीं। एक्सपर्ट का भी मानना है कि यात्रा से राहुल में नया उत्साह आया है और इसका फायदा उन्हें आने वाले चुनावों में मिलेगा। जैसा कि लोकसभा चुनाव 2024 के लिए तैयारियों का बिगुल अभी से बज चुका है। इन सबके बीच एक सर्वे में भी कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा को लेकर चौंकाने वाले आंकड़े सामने आए हैं।

सर्वे के इन आंकड़ों के अनुसार, यूपीए के वोट शेयर और सीटों में बढ़ोत्तरी हुई है। वहीं, कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा ने न सिर्फ पार्टी के लिए सियासी माहौल तैयार किया है, बल्कि राहुल गांधी की रीब्रांडिंग में भी काफी हद तक मदद की है। इसके साथ ही भारत जोड़ो यात्रा ने देशभर में लोगों को जोड़ने में कांग्रेस की एक बेहतर रणनीति के तौर पर नजर आई है। सर्वे के मुताबिक, 2014 के लोकसभा चुनाव में एनडीए को 38 फीसदी और यूपीए को 23 फीसदी वोट मिले थे। 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में एनडीए का वोट शेयर बढ़कर 45 तक पहुंच गया था, जबकि यूपीए को 27 फीसदी लोगों ने वोट किया था। पिछले दोनों लोकसभा चुनावों की तुलना करें, तो हर चुनाव में कांग्रेस का वोट शेयर बढ़ता नजर आया है। जो हालिया सर्वे में भी नजर आया है। इसी साल जनवरी महीने में सामने आए सर्वे के मुताबिक, अगर आज चुनाव होते हैं, तो एनडीए को 43 फीसदी वोट शेयर मिलेगा। वहीं, यूपीए को 30 फीसदी और अन्य को 27 फीसदी वोट शेयर मिलने का अनुमान जताया गया है।

नहीं पूरा होगा कांग्रेस विहीन भारत का सपना

बीजेपी के तमाम नेताओं ने कांग्रेस विहीन भारत का सपना को लेकर बयानबाजी की है। खुद पीएम नरेंद्र मोदी भी कई बार इसका जिक्र कर चुके हैं, लेकिन इस सर्वे में पीएम मोदी का ये सपना पूरा होता नहीं दिख रहा है. सर्वे के अनुसार, 37 फीसदी लोगों का मानना है कि यात्रा ने कांग्रेस के लिए सियासी माहौल बनाया है। हालांकि, इन्हीं लोगों का मानना है कि ये कांग्रेस के लिए चुनाव जीतने में मदद नहीं करेगी। 29 फीसदी लोगों का मानना है कि जनता से जुड़ने के लिए भारत जोड़ो यात्रा एक बेहतरीन फैसला था। इसके इतर 13 फीसदी लोगों ने भारत जोड़ो यात्रा को राहुल गांधी की रीब्रांडिंग की कोशिश बताया है, वहीं, 9 फीसदी लोगों का मानना है कि भारत जोड़ो यात्रा से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला है, इन आंकड़ों के अनुसार, एक बड़ा वर्ग कांग्रेस को नकारते हुए भी उसके पक्ष में ही खड़ा नजर आता है।

हर बार बढ़ रही हैं यूपीए की सीटें

2014 में हुए लोकसभा चुनाव में कांग्रेस नीत यूपीए ने 59 सीटों पर जीत हासिल की थी। जो 2019 में हुए लोकसभा चुनावों में बढ़कर 91 सीटों पर पहुंच गई थी। वहीं, इसी साल जनवरी महीने में सामने आए इस सर्वे में यूपीए के खाते में 153 सीटें जाती दिख रही हैं। साल 2022 के जनवरी महीने में भी इस एजेंसी के सर्वे में यूपीए को 127 सीटें मिलती हुई नजर आई थीं। इन आंकड़ों की तुलना की जाए, तो साफ हो जाता है कि अगर अभी चुनाव होते हैं, तो कांग्रेस की लोकसभा सीटें 2019 के आम चुनाव में सीटों की संख्या में 62 सीटों की बढ़ोत्तरी होती दिख रही है. ये चौंकाने वाला आंकड़ा ही कहा जा सकता है। वहीं, साल 2022 के सर्वे में इस साल हुए सर्वे में यूपीए को 26 सीटों की बढ़त मिलती दिख रही है।

विधान सभा चुनाव के लिए कठिन होगी बीजेपी की राह

» कहीं कांग्रेस तो कहीं क्षेत्रीय पार्टियों से मिलेगी टक्कर

» 2023 में होनी है 9 राज्यों में वोटिंग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। 2024 लोकसभा चुनाव से पहले सभी पार्टियों के लिए 2023 सेमीफाइनल की तरह होने वाला है। 2023 में 9 राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं। इन चुनावों में जिस भी पार्टी को बढ़त मिलेगी वही पार्टी 24 की सत्ता की सबसे प्रबल दावेदार बनेगी। खैर ये तो चुनावों के बाद ही पता चलेगा की ऊंट किस करवट बैठेगा, पर भाजपा से लेकर कांग्रेस तक सभी पार्टियों ने दोनों चुनावों लिए कमर कसना शुरू कर दिया है।

हाल के सालों में भाजपा को जैसी चुनावी सफलता मिली है, उससे इसमें संदेह नहीं है कि वह आज जनाधार के स्तर पर देश की सबसे वर्चस्वशाली पार्टी है। न केवल उसने बीते दो आम चुनावों में पूर्ण बहुमत पाया, 2024 के चुनावों के लिए भी दौड़ में सबसे आगे है। लेकिन 2023 में होने जा रहे विधानसभा चुनावों के बारे में क्या? क्या कांग्रेस और क्षेत्रीय पार्टियां भाजपा को चुनौती दे सकेंगी या क्या भाजपा सभी नौ राज्यों में जीत दर्ज करेगी, जैसा कि पार्टी अध्यक्ष ने हाल ही में दावा किया? हाल ही में हुई भाजपा की राष्ट्रीय कार्यसमिति में पार्टी अध्यक्ष ने घोषणा की कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को और मजबूती देने के लिए भाजपा को 2023 में होने जा रहे सभी नौ विधानसभा चुनाव और 2024 का लोकसभा चुनाव जीतना होगा। लेकिन सच ये है कि व्यापक जनाधार के बावजूद यह कल्पना करना कठिन है कि भाजपा सभी नौ राज्यों में जीत सकेगी। कुछ राज्यों में उसे कांग्रेस से कड़ी प्रतिस्पर्धा मिलेगी, वहीं दूसरे कुछ राज्यों-विशेषकर पूर्वोत्तर में- उसे क्षेत्रीय पार्टियों की चुनौती का सामना करना पड़ेगा। चार बड़े राज्यों में से मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक में भाजपा को कांग्रेस से कड़ा मुकाबला करना होगा। राजस्थान में कांग्रेस की अंतर्कलह का लाभ जरूर उसको मिल सकता है।

2019 के आम चुनावों में भाजपा ने इन राज्यों में लगभग सभी सीटें जीत ली थीं। मध्यप्रदेश में वह केवल एक और छत्तीसगढ़-कर्नाटक में दो-दो सीटों पर हारी। कर्नाटक में वह गठबंधन सहयोगियों के साथ चुनाव लड़ रही थी। लेकिन भाजपा को याद रखना चाहिए कि पिछली बार 2018 में जब विधानसभा चुनाव हुए थे, तो भाजपा को इन चारों राज्यों में हार का सामना करना पड़ा था। मतदाताओं ने 2018 में कांग्रेस को बढ़-चढ़कर वोट दिए थे, अलबत्ता 2019 के लोकसभा चुनावों में उन्हीं वोटरों ने भाजपा को चुना। ऐसे में 2023 के विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकते हैं, क्योंकि उनमें स्थानीय मुद्दों का बोलबाला रहेगा, जैसा कि हाल ही में हिमाचल प्रदेश में हुआ। 2018 में भाजपा ने त्रिपुरा में वामदलों को हराकर जीत दर्ज की थी और आईपीएफटी के साथ गठबंधन-सरकार बनाई थी। कांग्रेस कभी त्रिपुरा में प्रमुख विपक्षी दल हुआ करती थी, लेकिन उसका खाता भी नहीं खुल सका था और उसे मात्र 1.7 प्रतिशत वोट मिल पाए थे। यहां यह भी गौरतलब है कि अलबत्ता त्रिपुरा में वामदलों का सफाया हो गया था, लेकिन वे 44.3 प्रतिशत वोट पाने में कामयाब रहे थे। लेकिन इस बार त्रिपुरा में न तो वामदलों की वापसी के आसार दिख रहे हैं, न ही भाजपा सरकार वहां अधिक लोकप्रिय रह गई है। ऐसे में भाजपा त्रिपुरा को हलके में नहीं ले सकती। वहां उसे वामदलों से कड़ी टक्कर मिल सकती है। तेलंगाना में टीआरएस- जिसे अब बीआरएस कहा जाता है- मजबूत बने हुए है, हालांकि वहां भाजपा का तेजी से उदय हो रहा है। हमें भूलना नहीं चाहिए कि राज्य में हुए पिछले दो विधानसभा चुनावों में टीआरएस ने दूसरी पार्टियों का लगभग सूपड़ा साफ कर दिया था। 2018 में उसे 46.8 प्रतिशत वोट मिले और 119 में से 88 सीटें जीतने में वह सफल रही थी। तब कांग्रेस दूसरे पायदान पर रही थी, लेकिन उसके बाद से राज्य में उसका जनाधार घटा है, इसलिए इस बार मुख्य मुकाबला भाजपा और बीआरएस के बीच रह सकता है। चूंकि कांग्रेस का तेलंगाना में उस तरह से सफाया नहीं हुआ, जैसे उसके पड़ोसी आंध्र प्रदेश में हुआ है, इसलिए भाजपा और कांग्रेस के बीच बीआरएस-विरोधी वोटों का बंटवारा होगा और यह बीआरएस के लिए फायदेमंद रहेगा। भाजपा वहां चुनाव जीतने की उम्मीद फिलहाल तो नहीं कर सकती। मेघालय व मिजोरम ऐसे दो राज्य हैं, जहां भाजपा की उपस्थिति नगण्य है। 2018 में भाजपा ने मेघालय में 9.6 प्रतिशत वोट पाए थे और दो सीटें जीती थीं। वह नेशनल पीपुल्स पार्टी यानी एनपीपी के साथ गठबंधन करके सरकार का हिस्सा बन गई थी। जब एनपीपी ने 2023 का चुनाव अकेले लड़ने की घोषणा की तो उसके चार निर्वाचित विधायक भाजपा में शामिल हो गए। लेकिन इससे भाजपा एनपीपी को चुनौती देने की स्थिति में नहीं आ गई है। इसी तरह मिजोरम में भी भाजपा सत्तारूढ़ मिजो नेशनल फ्रंट को चुनौती देने की स्थिति में नहीं है। वहां वह 2018 में एक ही सीट जीत सकी थी। नगालैंड को छोड़ दें तो पूर्वोत्तर में कड़ी मेहनत के बावजूद भाजपा का जनाधार मजबूत नहीं हो सका है।

> "2023 के विधानसभा चुनाव भाजपा के लिए मिले-जुले साबित हो सकते हैं। वह नौ में से छह राज्यों में जीत दर्ज कर सकती है। तेलंगाना, मेघालय और मिजोरम में जीतना उसके लिए हाल-फिलहाल सम्भव नहीं लग रहा।"

जिद... सच की

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

नई तकनीकि से हो सकते हैं नवाचार के प्रयोग

"आज कम्प्यूटर्स इतनी तेजी से गणनाएं करने में सक्षम हैं, जितनी मनुष्य कभी नहीं कर सके थे। नई तकनीकें स्कूल, कॉलेज, लॉ फर्मों में मौजूद अटॉर्नी, अकाउंटेंट्स, डाटा विश्लेषण, फैक्ट-चेकिंग, डिजाइन फर्म्स, मार्केटिंग, फैशन आदि की दुनिया को हमेशा के लिए बदल देंगी। लेकिन इसके साथ ही हमें इस बात पर पूरा भरोसा रखना होगा कि हम मनुष्य उनका ठीक से इस्तेमाल करने और उन्हें काबू में रखने में सफल होंगे। क्योंकि मनुष्य सोच सकते हैं, अनुकूलन कर सकते हैं। हम जब तक अनुकूलन करते रहेंगे, हमारा अस्तित्व बचा रहेगा। स्कूलों में बच्चों को पहले की तरह लिखना सीखना होगा, लेकिन अब उन्हें रट्टेबाजी के बजाय सोचने की क्षमता, व्यक्तिगत सामर्थ्य और तकनीकी कुशलता विकसित करने पर ज्यादा ध्यान देना होगा।

शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान भारत में शिक्षा प्रणाली को आधुनिक बनाना चाहते हैं। वह नई एजुकेशन पालिसी को लागू करना चाहते हैं। उनका मानना है कि नई शिक्षा नीति से जहां छात्रों में स्किल से संबंधित प्रतिभा को बढ़ावा दिया जाएगा। उनका मानना है स्कूली स्तर से ही छात्रों को स्किल में पारंगत होने पर उन्हें काम मिलने आसानी होगी। सबसे बड़ा सवाल यह है कि नई शिक्षा नीति लागू करने के बाद जब छात्र पढ़कर तैयार होंगे तो क्या उनकों उनकी योग्यता के आधार पर नौकरी मिलेगी या केवल वह बेरोजगारों की दौड़ में शामिल हो जाएंगे। हालांकि आज के युवा बहुत क्रिएटिव हैं। वह आज इनोवेशन के जरिये दुनिया में अपनी धाक जमाने में लगे हुए हैं। आज युवा यूपीआई, इलेक्ट्रिक व्हीकल्स, घर पर लेजर हेयर रिमूवल, क्रिप्टोकरेंसी और डिजिटल हेल्थकेयर जैसी आधुनिक तकनीकों के अभ्यस्त होने की कोशिश में हैं।

आज ओपन एआई, जिसे सैन फ्रैंसिस्को स्थित एक कम्पनी ने आरम्भ किया है। इसमें कुछ ऐसे फीचर्स हैं, जो हमेशा-हमेशा के लिए हमारे जीवन के कुछ महत्वपूर्ण आयामों को बदलने में सक्षम हैं, जैसे कुछ सीखना, बच्चों को शिक्षा प्रदान करना, लिखना, पढ़ना या विश्लेषित करना आदि। इन एआई का प्रयोग भी भारतीय तेजी से करना चाहते हैं। हालांकि आधुनिकीकरण का असर भी पड़ता हैं जब तकनीकि का प्रयोग बढ़ेग मैन पावर पर असर पड़ेगा और उनकी नौकरियां चली जाएंगी। आज ताजातरीन चैटबॉट के कारण प्रोफेसर्स, प्रोग्रामर्स, ग्राफिक डिजाइनर्स और छोटे पत्रकार चंद ही सालों में अपनी नौकरियां गंवा सकते हैं! आज एक फीचर्स में से एक है- चैटजीपीटी। यह एक साधारण-से इंटरफेस की तरह है, जहां आप कुछ प्रश्न पूछते हैं या कोई कथन कहते हैं, जिसका चैटजीपीटी के द्वारा उत्तर दिया जाता है। वह अपना कंटेंट इंटरनेट से प्राप्त करता है। इससे छात्रों को लाभ मिलेगा और उनका ज्ञान बढ़ेगा। हालांकि विशेषज्ञ कहते हैं के फिर वह गूगल से अलग कैसे हुआ? पर अंतर यह है कि जहां गूगल किसी भी प्रश्न का उत्तर देने के लिए असंख्य वेब पेजेस से सूचनाएं संकलित करता है, वहीं चैटजीपीटी हमें सूचनाओं के वैसे बढ़े टेक्स्ट मुहैया कराता है, जो अत्यंत सटीक हैं और आप जो भी जानना चाहते हैं, उसे आपको समग्रता में प्रदान करने में सक्षम है। नई शिक्षा नीति में नए-नए तकनीकि का भी प्रयोग बढ़ाया जाए। आज आउटपुट्स जनरेट करने के लिए जितनी सूचनाओं का इस्तेमाल हो रहा है, वे हिन्द महासागर जितनी हैं। लेकिन इस साल उसके जो नए संस्करण लॉन्च किए जाने वाले हैं, वे पांचों महासागरों के बराबर सूचनाएं खंगालकर आउटपुट देने में सक्षम होंगे। ऐसे में हम मनुष्यों का भविष्य क्या होगा? क्या एआई हमारे सबसे बड़े क्रिएटिव जीनियस से भी ज्यादा बुद्धिमान बन जाएगी? शायद, देर-सबेर ही सही, पर हां ऐसा हो सकता है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

बेहाल गंगा और उसकी सखी-सहेलियां

पंकज चतुर्वेदी

गंगा नदी में वाराणसी से डिब्रूगढ़ तक सैलानियों को घुमाने निकला दुनिया का सबसे लंबा क्रूज 'गंगा विलास' बिहार के सारण में डोरीगंज के पास गाद में अटकने के कारण किनारे तक नहीं पहुंच सका। फिर वहीं लंगर लगाकर छोटे जहाजों के सहारे सैलानियों को सारण जिले के चिरांद तक लाकर महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों का भ्रमण कराया गया। बिहार में गंगा और सहायक नदियों में गाद भरने से नदियों के उथले होने का संकट हर साल गहरा रहा है। नि:संदेह गाद हर एक नदी का स्वाभाविक उत्पाद है लेकिन उसका प्रबंधन अनिवार्य है। गाद के जमने से नदी का प्रवाह बदल जाता है। इससे नदी कई धाराओं में बंट जाती है, किनारें कटते हैं। इससे नदी के मैदान का उपजाऊपन और ऊंचाई, दोनों घटने लग जाते हैं। ऊंचाई घटने से किनारों पर बाढ़ का दुष्प्रभाव अधिक होता है।

सेंटर फार गंगा रिवर बेसिन मेनेजमेंट एंड स्टडीज द्वारा जल शक्ति मंत्रालय को सौंपी गई रिपोर्ट बताती है कि उ.प्र., बिहार, उत्तराखंड, झारखंड की 65 नदियां बढ़ते गाद से हांफ रही हैं। हालांकि गाद नदियों के प्रवाह का नैसर्गिक उत्पाद है और देश के कई बड़े तीर्थ और प्राचीन शहर इसी गाद पर विकसित हुए हैं, लेकिन जब नदी के साथ बह कर आई गाद को किनारों पर माकूल जगह नहीं मिलती तो वह जल-धारा के मार्ग में व्यवधान बन जाता है। इससे नदियां उथली होती हैं, अकेले उत्तर प्रदेश में ऐसी 36 नदियां हैं, जिनकी कोख में इतनी गाद है कि न केवल उनकी गति मंथर हो गयी बल्कि कुछ ने अपना मार्ग बदला और उनका पाट संकरा हो गया, रही सही कसर अंधाधुंध बालू उत्खनन ने पूरी कर दी। उ.प्र. में कानपुर से बिठूर तक, उन्नाव के बक्सर-शुक्लागंज तक गंगा की धार बारिश के बाद घाटों से दूर हो जाती है। वाराणसी, मिर्जापुर और बलिया में गंगा नदी के बीच टापू बन जाते हैं। गाजीपुर, मिर्जापुर, चंदौली में नदी का प्रवाह कई छोटी-छोटी धाराओं में विभक्त हो जाता है। प्रयागराज के संगम के आसपास गंगा नदी में चार मिलीमीटर की दर से हर साल गाद जमा हो रहा है। गंगा की गहराई कम होने से उसकी धारा में भी परिवर्तन हो रहा है। आगे आने वाले दिनों में गंगा नदी की धारा और तेजी से परिवर्तित होगी।

ऐसे में बाढ़ का खतरा स्वाभाविक है। गंगा में प्राकृतिक और आबादी दोनों ओर से गाद पहुंच रही है। यह बात सरकारी रिकॉर्ड में है कि आज जहां पर संगम है, वहां यमुना की गहराई करीब 80 फीट है। वहीं, गंगा की गहराई इतनी कम है कि संगम के किनारे नदी में

खड़ा होकर कोई भी स्नान कर सकता है। यमुना की अधिक गहराई के चलते असंतुलन उत्पन्न हो रहा है। तभी संगम पूरब की तरफ बढ़ रहा है। कभी संगम सरस्वती घाट के पास हुआ करता था, लेकिन गंगा की गहराई लगातार कम होने से संगम पूरब की तरफ खिसकते हुए किला के पास आ गया है। आजादी के बाद तक गढ़ मुक्तेश्वर से कोलकाता तक जहाज चला करते थे। गाद के चलते बीते पांच दशक में यहां गंगा की धारा आठ किमी दूर खिसक गई है। बिजनौर के गंगा बैराज पर गाद की आठ मीटर मोटी परत है। आगरा व मथुरा में यमुना गाद से भर गई है। आजमगढ़ में घाघरा और तमसा के बीच गाद के कारण कई मीटर ऊंचे टापू बन गए हैं। घाघरा, कर्मनाशा, बेसो, मंगई, चंद्रप्रभा, गरई, तमसा, वरुणा और असि नदियां गाद से बेहाल हैं। उत्तराखंड में तीन नदियां गाद से बेहाल हैं। गंगा को बढ़ती गाद ने बहुत नुकसान पहुंचाया है। जिस तरह उत्तराखंड में नदी प्रवाह क्षेत्र में बांध, पनबिजली परियोजनाएं और सड़कें बनीं, उससे एक तो गाद की मात्रा बढ़ी, दूसरा उसका प्रवाह-मार्ग भी अवरुद्ध हुआ। गाद के चलते ही इस राज्य के कई सौ झरने और सरिताएं बंद हो गई हैं। सन् 2016 में केंद्र सरकार द्वारा गठित चितले कमेटी ने साफ कहा था कि नदी में बढ़ती गाद का एकमात्र निराकरण यही है कि नदी के पानी को फैलने का पर्याप्त स्थान मिले। एम.ए. चितले की अध्यक्षता में एक्सपर्ट कमेटी ने मई, 2017 में 'भीमगौड़ा (उत्तराखंड) से फरक्का (पश्चिम बंगाल) तक गंगा नदी की डिसिल्टेशन (गाद निकालने के काम) के लिए दिशानिर्देशों की तैयारी' पर अपनी रिपोर्ट जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय को सौंपी थी। कमेटी ने सुझाव दिया था कि नदियों में गाद जमा होना एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। फिर भी भारी वर्षा, जंगलों के कटान, जलाशयों के जल में संरचनागत हस्तक्षेप और बाड़ बनाने से नदियों में सिल्टेशन बढ़ता है।

साथ ही नदियों में जल भंडारण के उपायों को भी नुकसान पहुंचता है। डिसिल्टेशन से नदी के हाइड्रॉलिक प्रदर्शन में सुधार होता है। फिर भी अंधाधुंध गाद निकालने से नदी की इकोलॉजी और प्रवाह पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। जाहिर है कि ये सिफारिशें किसी ठंडे बस्ते में बंद हो गईं और अब नदियों पर रिवर फ्रंट बनाये जा रहे हैं जो न केवल नदी की चौड़ाई को कम करते हैं, बल्कि जल विस्तार को सीमेंट कंक्रीट से रोक भी देते हैं।

बाजार की जरूरत-सुविधाएं हों रेलवे की प्राथमिकता

सरबजीत अर्जन सिंह

वर्ष 2023-24 के बजट में रेलवे के लिए 2.4 लाख करोड़ रुपये रखे गए हैं, यह आज तक मिली बजटीय राशि का सर्वाधिक है। यह मद पिछले 2022-23 वित्तीय वर्ष के प्रावधान से 1 लाख करोड़ रुपये अधिक है। क्या इतने विशाल स्तर का निवेश होने से भारतीय रेलवे की माल ढुलाई क्षमता बढ़ पाएगी? राष्ट्रीय सुप्रचालन नीति में देश के सकल माल ढुलाई और आवागमन व्यवसाय में भारतीय रेलवे का मौजूदा 28 प्रतिशत हिस्सा बढ़ाकर 40 फीसदी करने का लक्ष्य रखा गया। लेकिन यह प्राप्ति भारतीय रेलवे की वर्तमान व्यावसायिक शैली में बदलाव लाए बिना संभव नहीं।

वर्ष 1990-91 में भारतीय रेल का हिस्सा सकल माल ढुलाई आवागमन में 62 फीसदी था, जो इसके बाद लगातार घटता गया और वर्ष 2014-15 आते-आते 27 फीसदी रह गया और तब से इसी आंकड़े के आसपास अटका हुआ है, जबकि बीच-बीच में क्षमता विस्तार हेतु विशाल निवेश भी किए गए। यह स्थिति काफी समय से भारतीय रेल के लिए चिंता का कारण बनी हुई है और अनेकानेक कमेटियों ने भारतीय रेल के गिरते बाजार हिस्से को थामने हेतु कई उपाय सुझाए दिए हैं। इन सुझावों पर कितनी हद तक अमल हुआ, यह तो मालूम नहीं है लेकिन तथ्य यह है कि बाजार-हिस्सा घटता गया। गिरावट थामने में विफल रहने के बाद भारतीय रेल ने घटते धंधे के कारण जानने को राइट्स (रेल इंडिया टेक्निकल एंड इक्नॉमिक सर्विस) नामक प्रकोष्ठ बनाया। राइट्स ने वर्ष 1997 में अपनी रिपोर्ट सौंप दी थी। इस अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष था कि भारतीय रेल गारंटी से समयसीमा में माल पहुंचाने वाली सेवा नहीं बना पाई और मांग के मुताबिक ढुलाई क्षमता बढ़ाने वाली प्रणाली भी नहीं बनाई गई है। इससे वस्तु आवागमन का झुकाव थलीय परिवहन की ओर होता चला गया। इसके अलावा, क्रियान्वयन एवं संगठनात्मक कमियां जैसे कि ग्राहक की बदलती जरूरतों के अनुरूप खुद को ढालना और परिवहन के अन्य साधनों से मिलने वाली प्रतिद्विंद्विता कारक रहे। भारतीय रेल न केवल माल ढुलाई को अपनी ओर आकर्षित करने की खातिर नए व्यावसायिक एवं विपणन तौर-तरीके अपना पाई बल्कि उद्योग जगत में 'माल भेजना हो भेजो, वर्ना रास्ता नापो' वाली अपनी छवि भी नहीं तोड़ सकी।

लगता है राइट्स द्वारा रिपोर्ट सौंपे जाने के 25 साल बाद भी स्थिति वस्तुत: जस की तस है, जैसा कि बिबेक देबरॉय कमेटी द्वारा 2015 में 'विशाल रेलवे परियोजनाओं हेतु स्रोत परिचालन और रेल मंत्रालय एवं रेलवे बोर्ड की पुनर्संरचना रिपोर्ट' भी बताती है। राष्ट्रीय सुप्रचालन नीति के लक्ष्य के अनुसार यदि भारतीय रेल को माल ढुलाई में पुराना रुतबा पाना है तो जिस काम को यह अपना मूल उद्देश्य समझती है, उस पर पुनर्विचार करने की जरूरत है। चूंकि किसी भी धंधे के पीछे प्रयोजन होना आवश्यक होता है लिहाजा भारतीय रेल का उद्देश्य भी काफी गहरा है और यह महज यात्री रेलगाड़ी परिचालन वाली मूल गतिविधि से परे है।

भारतीय समाज के लिए भारतीय रेल का महत्व कितना है, इसका पता किसी संकट की घड़ी में एकदम स्पष्ट हो जाता है, मसलन जब बिजलीघरों का कोयला-स्टॉक कम होने से लंबे बिजली कटों की नौबत बने या फिर जब कोरोना आपदा में ऑक्सीजन आपूर्ति हेतु विशेष कॉरिडोर बनाने की जरूरत आन पड़े। भारतीय रेल हमारे समाज का मुख्य प्रचालन अंग है, जिसका काम जनहित में माल ढुलाई और यात्री परिवहन सेवा देना है। यदि प्रतिस्पर्धा बाजार में अपना हिस्सा बढ़ाना है तो यह केवल उपभोक्ताओं की संख्या बढ़ाकर ही हो पाएगा। इसलिए भारतीय रेल का केवल एक ही व्यावसायिक प्रयोजन होना चाहिए कि ज्यादा से ज्यादा ग्राहक आकर्षित हों और बंधे रहें वह जो सेवा का मोल जानते हैं और इसके लिए पैसा चुकाने को भी तैयार हैं। रेलवे को ग्राहक की जरूरतों के अनुसार ढलना होगा न कि उम्मीद करे कि जो भी-जैसा भी करे, वह उसे मंजूर हो। दुर्भाग्यवश, भारतीय रेल ने इस लीक विशेष को ध्यान में रखकर नहीं सोचा। यह अपना मूल काम यात्री रेलगाड़ियां चलाने से परिभाषित करती रही, हालांकि कहीं नहीं लिखा कि यही भारतीय रेल का मुख्य प्रयोजन है।

नतीजतन, इसकी कार्यप्रणाली में व्यवसाय के दो अति आवश्यक अवयव यानी विपणन और नवोत्थान लगभग नदारद रहे। यदि भारतीय रेल को ढुलाई बाजार में अपना हिस्सा फिर से पाना है तो टिकाऊ धंधे की उद्देश्य प्राप्ति में विपणन की भूमिका की अहमियत स्वीकार करनी होगी। सेवा-प्रदान और धंधा बढ़ाने का काम केवल आम व्यावसायिक विभाग को सौंप देना काफी नहीं है। विपणन का आयाम निरोल सेवा-प्रदाता बने रहने से कहीं अधिक विस्तृत है और इसके दायरे में समूचा व्यवसाय आता है। भारतीय रेल को अंतिम परिणाम उपभोक्ता के नजरिए से देखने की जरूरत है। इससे मनोरथ है कि कैसे भारतीय रेल को अपनी सोच और व्यवसाय प्रबंधन में बड़ा अंतर लाना चाहिए। अब यदि भारतीय रेल का कामकाज नवनिर्मित भारतीय रेल प्रबंधन सेवा से चालित होने जा रहा है तो उम्मीद करें कि नई सोच भी पैदा कर पाएगी। विपणन को ध्यान का केंद्र बनाना आवश्यक है। इसके लिए, भारतीय रेल को मजबूत नवोत्थान व्यवस्था बनाने की जरूरत है जो ऐसी सेवाएं दे सके, जिनका महत्व उपभोक्ता के लिए है। भारतीय रेल चाहे तो अमेरिकी रेल मॉडल अपना सकती है, जिसके पास दो नवोत्थान केंद्र हैं। एक का काम है परिवहन संचालन यानी इंजन, डिब्बे, मालगाड़ी, पटरियां, सिग्नल और संचार इत्यादि का प्रबंधन करना तो दूसरा नई यात्री एवं माल ढुलाई सेवाएं विकसित करने, अपने धंधे की नई मांग पैदा करने और परिवहन के नए स्रोत विकसित करने का काम देखता है।

आंखों की रोशनी बढ़ाने में सहायक

एक रिसर्च जर्नल के मुताबिक, पत्ता गोभी में ल्यूटिन और जेक्सैंथिन पाया जाता है। ये दोनों तत्व आंखों की सेहत के लिए फायदेमंद है। आंखों की रोशनी को तेज करने के लिए भी पत्ता गोभी का सेवन कर सकते हैं।

पत्ता गोभी में पाए जाने वाले पोषक तत्व

पत्ता गोभी या बंद गोभी में मौजूद पोषक तत्व सेहत के लिए फायदेमंद माने जाते हैं। पत्ता गोभी में एंटीऑक्सीडेंट और एंटी इंफ्लेमेटरी के गुण पाए जाते हैं, जो गैस्ट्रोइंटेस्टाइनल विकार जैसे- गैस्ट्रिटिस, पेप्टिक व डुओडेनल अल्सर, इर्रिटेबल बाउल सिंड्रोम में फायदेमंद है। इसमें विटामिन, मिनरल और फाइटोन्यूट्रिएंट्स भरपूर मात्रा में होता है। पत्ता गोभी में फाइबर ज्यादा और कैलोरी कम पाई जाती है। पत्ता गोभी में रैफिनोस पाया जाता है, जिसमें चीनी की मात्रा पाई जाती है। चीनी जटिल कार्बोहाइड्रेट का एक प्रकार है। यह आंखों से गुजरता हुआ पेट में समस्या कर सकता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता

इम्यूनिटी मजबूत करने के लिए भी पत्ता गोभी लाभकारी है। पत्ता गोभी में विटामिन सी भरपूर होता है, जो इम्यून सिस्टम को बेहतर बनाता है। रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के लिए पत्ता गोभी के जूस का सेवन कर सकते हैं। इससे सर्दी बुखार और संक्रमण से बचाव होता है।

औषधीय गुणों से युक्त है पत्ता गोभी

हरी पत्तेदार सब्जियों को सेहत के लिए फायदेमंद माना जाता है। आहार एवं पोषण विशेषज्ञ, नियमित सब्जियों के सेवन की सलाह देते हैं। सब्जियों में कई तरह के पोषण तत्व और यौगिक पाए जाते हैं, जो कई बीमारियों से बचाव करते हैं। शरीर और मस्तिष्क को पोषण की जरूरत होती है, जिसे सब्जियां पूरी कर सकती हैं। सब्जियों में औषधीय गुणों होते हैं, जो इम्यूनिटी पावर को मजबूत करते हैं। शरीर की भिन्न भिन्न व्याधियों के लिए उपयोगी ये प्राकृतिक भोज्य पदार्थ अमृततुल्य हैं। इनमें से एक औषधीय गुणों से युक्त सब्जी पत्ता गोभी है। पत्ता गोभी के सेवन के कई फायदे होते हैं। पत्ता गोभी आंखों की रोशनी के लिए, अल्सर और कैंसर में असरदार माना जाता है। लेकिन पत्ता गोभी का सही तरीके से सेवन न करने से यह नुकसानदायक हो जाता है। गले में एलर्जी, ग्लूकोज लेवल कम होने जैसे तमाम नुकसान भी हो सकते हैं। पत्ता गोभी के सेवन से पहले इसके फायदे और नुकसान के बारे में जान लें।

कैंसर में फायदेमंद

एक रिसर्च के मुताबिक, पत्ता गोभी में ब्रैसिनिन तत्व पाए जाते हैं जो कैंसर के खिलाफ कीमो प्रिवेंटिव गतिविधि दर्शाते हैं। कैंसर ट्यूमर से बचाव के लिए पत्ता गोभी का सेवन कर सकते हैं। एक अन्य शोध के मुताबिक, पत्ता गोभी में एंटी कैंसर प्रभाव हो सकता है। हालांकि कैंसर के इलाज में महज पत्ता गोभी कारगर नहीं है लेकिन रोग के जोखिम को कम कर सकता है। बहुत ही कम मामलों में लेकिन पत्ता गोभी के अधिक सेवन से गले में एलर्जी की शिकायत हो सकती है। ज्यादा पत्ता गोभी का सेवन थायराइड के मरीजों के लिए समस्या कर सकता है। इसलिए उन्हें पत्ता गोभी के अधिक सेवन से परहेज करना चाहिए।

पाचन और कब्ज

पत्ता गोभी पेट की समस्या में फायदेमंद है। पाचन और कब्ज से राहत दिलाता है। लाल पत्ता गोभी में एंथोसायनिन पॉलीफेनोल पाया जाता है, जो पाचन क्रिया को उत्तेजित करने का काम करता है। पत्ता गोभी में फाइबर होता है, जो पाचन में सहायक है। इसके सेवन से मन मुलायम होने से कब्ज में मदद मिलती है। मधुमेह रोगियों के लिए पत्ता गोभी लाभकारी भी हो सकता है और नुकसानदायक भी। पत्ता गोभी का सेवन सामान्य रक्त शुगर होने पर ग्लूकोज लेवल को कम कर सकता है।

हंसना मना है

5 साल का बच्चा: आई लव यू मां, मां: आई लव यू टू बेटा! 16 साल का लड़का: आई लव यू मॉम, मां: सॉरी बेटा, पैसे नही है! 25 साल का लड़का: आई लव यू मां, मां: कौन है वो चुड़ैल? कहां रहती है? 35 साल का आदमी: आई लव यू मां, मां: बेटा मैंने पहले ही बोला था, उस लड़की से शादी मत करना! और सबसे बढ़िया.. 55 साल का आदमी: आई लव यू मां, मां: बेटा, मै किसी भी कागज पर साइन नहीं करूंगी!

फ्रेंड: यार तुम्हारी दुकान मिठाई की है, तो क्या तुम्हारा दिल नहीं करता, मिठाई खाने को? संता: यार करता तो बहोत है, लेकिन पापा रसगुल्ले गिन के जाते है, तो.. इसलिए, चूसकर रख देता हुं।

मोहब्बत के खर्चों की बड़ी लंबी कहानी है, कभी फिल्म दिखानी है तो कभी शॉपिंग करानी है, मास्टरजी रोज कहते है कहां है फीस के पैसे? उसे कैसे समझाऊं की मुझे छोरी पटानी है!

तेरी दुनिया में कोई गम न हो, तेरी खुशियां कभी कम न हो, भगवान तुझे ऐसी आईटम दे, जो सनी लिओनी से कम न हो !

मैं बचपन से इतना प्रतिभाशाली रहा हूं कि रिश्तेदार परीक्षा परिणाम के बाद सिर्फ इतना ही पूछते है, तू पास हुआ या नहीं?

कहानी | बैल और शेर

एक जंगल में तीन बैल रहा करते थे। तीनों आपस में अच्छे मित्र थे। वो घास चरने के लिए जंगल में एक साथ ही जाया करते थे। उसी जंगल में एक खूंखार शेर भी रहता था। शेर इन तीनों को मारकर खा जाना चाहता था। उसने कई बार बैलों पर आक्रमण भी किया, लेकिन बैलों की आपसी मित्रता के कारण वो कभी सफल नहीं हो पाया। जब शेर उन पर हमला करता था, तो तीनों बैल त्रिकोण बनाकर अपने नुकीले सींगों से अपनी रक्षा करते थे। तीनों बैल साथ मिलकर कई बार शेर को भगा चुके थे। शेर यह समझ गया था कि जब तक ये तीनों साथ रहेंगे, इन्हें मारा नहीं जा सकता है। इसलिए, उसने एक दिन इन तीनों को अलग करने के लिए एक चाल चली। शेर ने बैलों को अलग करने के लिए जंगल में एक अफवाह उड़ा दी। अफवाह यह थी कि इन तीनों बैलों में से एक बैल अपने साथियों को धोखा दे रहा है। बस फिर क्या था, बैलों के बीच इस बात को लेकर शक बैठ गया कि आखिर वो कौन है, जो हमें धोखा दे रहा है? एक दिन इसी बात को लेकर तीनों बैलों में झगड़ा हो गया। शेर ने जो सोचा था, वो हो गया था। अब तीनों बैल अलग-अलग रहने लगे थे। उनकी दोस्ती टूट चुकी थी। अब वो अलग-अलग होकर जंगल में चरने जाने लगे थे। बस शेर को इसी मौके का इंतजार था। शेर ने एक दिन उन तीनों बैलों में से एक पर हमला बोल दिया। अकेले पड़ जाने की वजह से वह बैल शेर का मुकाबला नहीं कर पाया और शेर ने उसे मार डाला। कुछ दिनों के बाद शेर ने दूसरे बैल पर भी हमला कर दिया और उसे मारकर खा गया। अब सिर्फ एक बैल बचा था। वह समझ गया था कि शेर अब उसको भी मार डालेगा। उसके पास बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। वह अकेले शेर का मुकाबला नहीं कर सकता था। एक दिन जब वह जंगल में घास चरने गया था, तो शेर ने उसे भी अपना शिकार बना लिया। शेर की चाल पूरी तरह कामयाब हुई और उसने तीनों बैलों की दोस्ती तोड़कर उन्हें अपना शिकार बना लिया था।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष
धर्म-कर्म में रुचि रहेगी। धन प्राप्ति सुगम होगी। कानूनी बाधा दूर होकर लाभ होगा। पूंजी निवेश बढ़ेगा। पहले किए गए कार्यों का लाभदायी फल आज मिल सकेगा।

वृषभ
फालतू खर्च होगा। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। वाणी पर नियंत्रण रखें। चिंता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। नवीन मुलाकातों से लाभ होगा। आमदनी बढ़ेगी।

मिथुन
विवाद से क्लेश होगा। शारीरिक कष्ट संभव है। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। आपसी मतभेद, मनमुटाव बढ़ेगा। किसी से मदद की उम्मीद नहीं रहेगी।

कर्क
घर-बाहर तनाव रहेगा। विवाद को बढ़ावा न दें। जल्दबाजी न करें। नई योजना बनेगी। किसी मामले में कटु अनुभव मिल सकते हैं। सरकारी, कानूनी विवाद सुलझेंगे।

सिंह
रोजगार मिलेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। विवाद न करें। नौकरी करने वालों को ऐच्छिक स्थानांतरण एवं पदोन्नति मिलने की संभावना है।

कन्या
चोट, चोरी व विवाद आदि से हानि संभव है। पुराना रोग उभर सकता है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। परिवार की स्थिति अच्छी रहेगी। रचनात्मक काम करेंगे।

तुला
शारीरिक कष्ट से बाधा संभव है। भागदौड़ रहेगी। घर-परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। राजकीय सहयोग मिलेगा। कार्यकुशलता सहयोग से लाभान्वित होंगे।

वृश्चिक
चोट व रोग से बाधा संभव है। बेचैनी रहेगी। भूमि व भवन संबंधी बाधा दूर होगी। रोजगार मिलेगा। संतान के स्वास्थ्य में सुधार होगा। सोचे कामों में मनचाही सफलता मिलेगी।

धनु
पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा। विद्यार्थी वर्ग को सफलता मिलेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रमाद न करें। नए कार्यों, योजनाओं की चर्चा होगी।

मकर
पुराना रोग उभर सकता है। भागदौड़ रहेगी। दु:खद समाचार मिल सकता है। धैर्य रखें। अस्वस्थता बनी रहेगी। खुद के प्रयत्नों से ही जनप्रियता एवं सम्मान मिलेगा।

कुम्भ
प्रयास सफल रहेंगे। प्रशंसा प्राप्त होगी। धन प्राप्ति सुगम होगी। वाणी पर नियंत्रण रखें। लाभ होगा। व्यवसाय अच्छा चलेगा। कार्य क्षेत्र में नई योजनाओं से लाभ होगा।

मीन
पुराने संगी-साथियों से मुलाकात होगी। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। परिश्रम का पूरा परिणाम मिलेगा। अच्छी व सुखद स्थितियां निर्मित होंगी।

पठान की सफलता पर सिद्धार्थ ने दीपिका की तारीफ में पढ़े कसीदे

बॉलीवुड | मसाला

सा दीपिका पादुकोण बॉलीवुड की बेहतरीन एक्ट्रेस में से हैं। अभिनेत्री ने अपनी खूबसूरती और अभिनय से लोगों के दिलों में जगह बनाई है। वह बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेस में से एक हैं। अभिनेत्री ने बॉलीवुड में अपने करियर की शुरुआत शाहरुख खान के साथ फिल्म ओम शांति ओम से की थी। हाल ही में रिलीज दीपिका पादुकोण, शाहरुख खान और जॉन अब्राहम स्टार फिल्म पठान इन दिनों दर्शकों को खूब पसंद आ रही है। फिल्म को लेकर काफी चर्चा हो रही है।

पठान के ट्रेलर रिलीज से लेकर गाने और फिल्म के एक्शन की खूब चर्चा हुई है। फिल्म का गाना बेशरम रंग रिलीज के बाद से काफी विवादों से घिरा रहा है। वहीं, अभिनेत्री दीपिका पादुकोण भी इसको लेकर काफी चर्चा में रही हैं। दीपिका फिल्म पठान की रिलीज के बाद और भी ज्यादा मजबूती के साथ स्क्रीन पर नजर आई हैं। दीपिका पहली बार किसी स्पाई फिल्म में अभिनय करती हुई दिखी हैं। एक्ट्रेस के अभिनय और काम को लेकर खूब सराहना की जा रही है। फिल्म में दीपिका के किरदार से महज जनता ही नहीं, बल्कि मूवी के निर्देशक सिद्धार्थ आनंद भी उनके फैन हो गए हैं। सिद्धार्थ आनंद का कहना है कि दीपिका हिंदी फिल्मों के लिए एक कंप्लीट पैकेज हैं। वह किसी भी हीरो से कम नहीं हैं और इससे उनका स्टारडम कई गुना बढ़ जाता है। सिद्धार्थ आनंद ने अभिनेत्री की तारीफों के पुल बांधते हुए कहा कि दीपिका बहुत बड़ी स्टार हैं। इसका आपको तब पता चलता है जब आप उनके साथ काम करते हैं कि उनके फैंस की क्या जरूरत है। दीपिका एक हीरो की तरह है। पठान में तीन हीरो हैं शाहरुख, जॉन और दीपिका। ये तीनों ही कलाकार इस फिल्म के हीरो हैं।

टेलीविजन एक्ट्रेस चांदनी को मिला फालके अवार्ड

बॉलीवुड | छोटा पर्दा

हि माचल के मंडी जिले की बेटी चांदनी शर्मा बेस्ट टेलीविजन एक्ट्रेस चुनी गई है। इसके लिए चांदनी को दादा साहेब फालके टीवी अवार्ड से नवाजा गया है। मुंबई के सेंटाक्रूज स्थित ताज होटल में हुए अवार्ड शो में उन्हें यह सम्मान मिला। इस दौरान कार्यक्रम में टीवी इंडस्ट्री के जाने माने लोग मौजूद रहे।

बता दें कि सोनी टीवी के कामना सीरियल धारावाहिक में बेहतरीन अदाकारी करने वाली चांदनी मंडी के गांव गोहर से हैं। चांदनी शर्मा ने अवार्ड लेने के बाद कहा कि यह सम्मान पाकर वह बेहद खुश हैं। उन्हें भविष्य में और अधिक बेहतर करने की प्रेरणा मिली है और उनके लिए यह अवार्ड प्रेरणास्रोत का काम करेगा। कामना शो में अपने किरदार आकांक्षा के बारे में चांदनी ने बताया कि यह किरदार निभाते समय लगा ही नहीं कि मैं एक्टिंग कर रही हूं। इसका श्रेय लेखकों को जाता है, जिन्होंने इतनी खूबसूरती से आकांक्षा के किरदार को गढ़ा है। यह रील किरदार मेरी रियल जिंदगी से मेल खाता है। चांदी बताती हैं कि आकांक्षा और मैं, दोनों एक ही शहर से हैं, जो अपनी जिंदगी में कुछ बड़ा करना चाहते हैं। हम दोनों की परवरिश मध्यम वर्गीय मूल्यों के साथ हुई है, लेकिन हम दोनों बहुत कुछ करने की तमन्ना रखते हैं। मैं अपने घर पर रहकर अपनी पढ़ाई करके मां-बाप की इच्छा के हिसाब से सेटल हो सकती थी। चांदनी ने बताया कि जैसे मुझे एक बेहतर जिंदगी का अनुभव करने की ख्वाहिश थी और इसलिए मैं अपने सपनों को पूरा करने, करियर बनाने और इसकी खूबियों का मजा लेने के लिए मुंबई आ गई। इसी तरह आकांक्षा भी करती है और अपने सपनों को पूरा करने के लिए उड़ान भरती है। बता दें कि पूरे हिमाचल प्रदेश सहित जिला मंडी और गोहर में बेटी को मिले सम्मान की खुशी में जश्न का माहौल है। परिवार भी खुशी से फूला नहीं समा रहा। चारों ओर कलाकार चांदनी शर्मा की तारीफ की जा रही है। क्षेत्रवासी प्रफुल्लित हो उठे हैं और अपनी बेटी की इस उपलब्धि पर जश्न मना रहे हैं।

बॉलीवुड | मन की बात

मैंने फिल्मों में किस सीन नहीं करना चाहती थी : रवीना टंडन

र वीना टंडन ने कई शानदार फिल्में की हैं। एक्ट्रेस ने अपनी शर्तों पर फिल्मों में काम किया है। हाल ही में रवीना ने एक इंटरव्यू के दौरान उस समय को याद किया जब उन्होंने एक फिल्म में स्विमिंग कॉस्ट्यूम पहनने या किस सीन करने से इनकार कर दिया था। एक्ट्रेस ने बताया कि वह केवल एक शर्त पर अपनी फिल्मों में रेप सीन करने के लिए तैयार हुई थी कि उनके कपड़े पूरी तरह से बरकरार रहेंगे। रवीना ने इस तरह की पॉलिसी के साथ काम करने वाली खुद को अकेली एक्ट्रेस भी बताया था। रवीना ने कहा, मैं बहुत सी चीजों से अनकंफर्टेबल हो जाती थी। जैसे कि डांस स्टेप्स। अगर मैं किसी चीज से अनकंफर्टेबल होती तो मैं कहती कि सुनो मैं इस स्टेप से कंफर्टेबल नहीं हूं। मैं स्विमिंग कॉस्ट्यूम नहीं पहनना चाहती थी, और मैंने किसिंग सीन नहीं किए थे। इसलिए मेरे पास मेरा फंडा था। मैं अकेली ऐसी एक्ट्रेस थी जिसने रेप सीन तो किए लेकिन कपड़े जरा भी नहीं फटे। रवीना ने कहा, मेरा ड्रेस फटेगा नहीं... तुम कर लो रेप सीन अगर करना है। इसलिए वे मुझे घमंडी कहते थे। रवीना ने बताया, डर मेरे पास पहले आई थी, हालांकि यह वल्गर नहीं थी लेकिन पहले डर में कुछ सीन थे जिनसे मैं कंफर्टेबल नहीं थी। मैंने कभी स्विमिंग कॉस्ट्यूम नहीं पहना था। मैं कहूंगी, नहीं, मैं स्विमिंग कॉस्ट्यूम नहीं पहनूंगी। यहां तक कि 'प्रेम कैदी' पहली फिल्म जिसके साथ मुझे लगता है कि लोलो लॉन्च हुई थी वास्तव में मुझे पहले ऑफर की गई थी। लेकिन उसमें भी सिर्फ एक सीन था जहां हीरो ने जिप नीचे खींची थी और स्ट्रैप दिखाई दे रही थी मैं इससे अनकंफर्टेबल थी। हाल ही में रवीना ने बॉलीवुड में बॉडी शेमिंग पर भी बात की थी। उन्होंने कहा था कि मेल एक्टर्स ने जो भी कहा वह आखिरी शब्द होते थे। उन्होंने यह भी कहा कि औरत ही औरत की सबसे खराब दुश्मन थीं क्योंकि वे दूसरों को नीचा दिखाने के लिए बॉडी-शेम्ड, स्लट-शेम्ड करती हैं। उन्होंने ये भी खुलासा किया था कि 90 के दशक जर्नलिज्म की दुष्टता से खफा होकर उन्होंने इंडस्ट्री से ब्रेक ले लिया था और फिल्म डिस्ट्रिब्यूटर अनिल थडानी से शादी कर ली थी।

नौ साल की उम्र में पूरा कर लिया ग्रेजुएशन हैरान कर देगी इस बच्चे की कहानी

आपने जीनियस बच्चों के बारे में बहुत सुना होगा। पर आज हम एक ऐसे बच्चे की कहानी बताने जा रहे हैं जिसे सुनकर आप भी दंग रह जाएंगे। जिस उम्र में बच्चे तीसरी या चौथी कक्षा में पढ़ाई कर रहे होते हैं उसी उम्र में एक बच्चे ने ग्रेजुएशन पूरा कर लिया। छोटी-सी उम्र में ही वह कई रिकॉर्ड बना चुका है और काफी मशहूर हो रहा है। उसकी ख्वाहिश आपको और भी हैरान कर देगी। इस जीनियस बच्चे का नाम है डेविड बालोगुन। अमेरिका के रहने वाले डेविड ने अभी-अभी हाई स्कूल से स्नातक किया है। उसे पेन्सिलवेनिया में रीच साइबर चार्टर स्कूल से डिप्लोमा भी मिल चुका है। उसने कहा, कॉलेज ने मुझे प्रेरित किया और कहा, तुम ऐसा कर सकते हो, और तुम ऐसा करोगे। विशेषज्ञ कह रहे कि यह बच्चा हाई आईक्यू लेवल के साथ पैदा हुआ है और ऐसे बच्चों को गिफ्टेड चाइल्ड कहा जाता है। आपको बता दें डेविड महज नौ साल का है और उसकी ख्वाहिश है कि एक खगोल वैज्ञानिक बने। वह ब्लैक होल और सुपरनोवा का अध्ययन करना चाहता है। उसके पास इसके लिए एक प्लान भी है। तीन साल पहले जब उसने हाईस्कूल में एडमिशन लिया तो कोरोना महामारी के कारण सारे स्कूल बंद हो गए। फिर भी उसने हार नहीं मानी। ऑनलाइन क्लासेस अटेंड की। ज्यादातर समय वह साइंस और कंप्यूटर प्रोग्रामिंग के सब्जेक्ट पढ़ता था। इसमें उसकी विशेष रुचि थी। ग्रेजुएशन पूरा करने में तीन साल से भी कम समय लगा और उसने 4.0 से अधिक के GPA के साथ कामयाबी हासिल की। डेविड अपनी कामयाबी का श्रेय अपने टीचर्स को देता है लेकिन टीचर्स का कहना है कि इस बच्चे ने पढ़ाने का तरीका बदलने की ओर इशारा किया है। साइंस टीचर कोडी डेर ने कहा, डेविड एक इंस्पेरेशनल किड था और निश्चित तौर पर वह शिक्षण के बारे में आपके सोचने के तरीके को बदल देता है। उसके माता पिता भी काफी पढ़े लिखे हैं पर वे मानते हैं कि ऐसे बच्चे को पालना चुनौतीपूर्ण है जो बौद्धिक रूप से बहुत प्रतिभाशाली है। मां रोन्या कहती हैं कि मुझे पुरानी सोच से बाहर निकलना पड़ा। जिस उम्र में बच्चे पिलो फाइट करते हैं, वह तमाम अजीबोगरीब सवाल करता है। उसका ब्रेन उसकी उम्र से ज्यादा बुद्धिमान है। जब मैं पहली कक्षा के लिए स्कूल लेकर गई थी तभी वह तीसरी या चौथी कक्षा के बच्चों के साथ कंपटीट कर रहा था।

अजब-गजब | अब तक 2000 से ज्यादा बच्चे हो चुके हैं शिकार

बीमार होने पर नवजात की नीली नसों को गर्म लोहे से दगवाने की है प्रथा

मध्य प्रदेश का शहडोल जिला आदिवासी बहुल इलाका है। यहां आज भी सामाजिक कुरीति चलन में है। ठंड के समय में जब बच्चे बीमार पड़ते हैं और उन्हें सांस लेने में तकलीफ होती है तो परिजन नवजात की नीली नसों को गर्म लोहे से दगवाते हैं। शहडोल में लगभग 2 हजार से ज्यादा बच्चे इस कुप्रथा का शिकार हो चुके हैं। प्रशासन लगातार जागरूकता अभियान चला रहा है। कार्रवाई भी कर रहा है। यहां तक कि धारा 144 लागू की। इसके बावजूद मैदानी स्तर पर इस कुप्रथा को रोकने में पूर्ण सफलता हाथ नहीं लग सकी है। शहडोल में दगना कुप्रथा का दंश आज भी बच्चों को भुगतना पड़ रहा है। हाल ही में जिले में ऐसे 2 मामले सामने आए हैं, जिसमें मासूम दुधमुही बच्चियों को गर्म लोहे से दागा गया। इनमें से एक बच्ची की मौत हो गई, वहीं दूसरी बच्ची इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती की गई है।

दागना कुप्रथा को लेकर जिला प्रशासन और मेडिकल कॉलेज आमने-सामने आ गए हैं। कलेक्टर का कहना है कि बच्ची की मौत निमोनिया के कारण हुई, जबकि मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर मौत की वजह कहीं न कहीं दागना को ही बता रहे हैं। इस पूरे मामले में जिला प्रशासन के निर्देश पर मृत बच्ची के परिजनों के विरुद्ध केस दर्ज किया गया है।

मेडिकल कॉलेज (शहडोल) में जिस 3 माह की बच्ची की मौत हुई थी, उसके शव को कब्र से निकाला गया है। इसके बाद विवाद और बढ़ गया है। तीन दिन पहले जिस बच्ची की मौत हुई थी, उसके शव को कठौतिया गांव में परिजनों ने दफना दिया था। हड़कंप मचने के बाद पुलिस ने शव को निकलवाकर पीएम करवाया है, जिसकी रिपोर्ट का इंतजार किया जा रहा है।

शव निकालने को लेकर भी प्रशासन, पुलिस और मेडिकल कॉलेज आमने-सामने हैं। कलेक्टर का कहना है कि पुलिस के आवेदन पर शव निकालने की अनुमति दी गई थी। वहीं, पुलिस कह रही है कि मेडिकल कॉलेज ने आवेदन दिया था, जिसके बाद शव निकालने की अनुमति मांगी गई। मेडिकल कॉलेज इस पूरे मामले से खुद को बचाते हुए नजर आ रही है। मेडिकल कॉलेज प्रबंधन का कहना है कि हमने शव का पीएम करने के लिए कोई आवेदन नहीं दिया है।

ओपीएस के लिए किया गया बजट प्रावधान : सीएम सुक्खू

» पूर्व में भाजपा सरकार ने डीए की घोषणा कर दी, लेकिन 992 करोड़ रुपये डीए की किश्त भी नहीं दी : सीएम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

शिमला। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने भाजपा के आरोपों को गलत बताते कहा कि पुरानी पेंशन योजना (ओपीएस) दे दी गई। भाजपा की तरह काम नहीं किया है। बजट का प्रावधान किया गया है। अधिकारियों कर्मचारियों से चर्चा के बाद कैबिनेट पर इस योजना पर मुहर लगाई है। सीएम ने भाजपा पर तंज कसते हुए कहा कि वह भाजपा की तरह काम नहीं करते हैं।

पूर्व में भाजपा सरकार ने छठा वेतन आयोग लागू कर दिया, लेकिन एरियर पेंशनभोगियों और अधिकारियों-कर्मचारियों को नहीं दिया। डीए की घोषणा कर दी, लेकिन 992 करोड़ रुपये डीए की किश्त भी नहीं दी। जबकि कांग्रेस सरकार ने पुरानी पेंशन योजना में बजट का प्रावधान किया है। अब केवल एसओपी की औपचारिकता है। सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों व अधिकारियों को पुरानी पेंशन योजना का लाभ मिलना शुरू हो जाएगा।

कहा कि कांग्रेस सरकार पांच साल के लिए आई है। दस में से पहली गारंटी पूरी कर दी है। आने वाले सालों में गारंटी को पूरा किया जाएगा। एक प्रश्न का जवाब देते हुए सीएम ने कहा कि हस्ताक्षर अभियान चलाना विपक्षी पार्टी का दायित्व होता है, उन्हें इस तरह अभियान चलाना भी चाहिए। अदाणी समूह मामले पर सीएम ने कहा कि वह कंपनी कार्यप्रणाली पर सवाल नहीं उठा रहे हैं। ट्रक ऑपरेटरों की मांग की बात कह रहे हैं। दोनों पक्ष अब खुद वार्तालाप कर रहे हैं तो जल्द मामला सुलझने की उम्मीद है।

3.35 करोड़ रुपये से बनेगी लालसिंगी झलेड़ा सड़क, सीएम ने किया भूमि-पूजन

मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कोटला कलां स्थित श्री राधा-कृष्ण मंदिर में धार्मिक समागम में भाग लिया और बाबा बाल का आशीर्वाद प्राप्त किया। मंदिर पहुंचने पर ढोल-नगाड़ों के साथ मुख्यमंत्री का स्वागत किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने 3.35 करोड़ रुपये की लागत से लालसिंगी (बाबा बेली राम) से लेकर झलेड़ा तक बनने वाली सड़क का भूमि पूजन भी किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऊना संतों की धरती है और यहां आकर उन्हें प्रसन्नता हुई है।

अस्पताल के निरीक्षण में भड़के डिप्टी सीएम

जिम्मेदारियों में हीलाहवाली करने पर बख्शा नहीं जाएगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भदोही। उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने भदोही कलेक्ट्रेट में विकास कार्यों की समीक्षा की। बैठक के दौरान अफसरों की धुकधुकी बढ़ी रही। उन्होंने योजनाओं के शत-प्रतिशत क्रियान्वयन का निर्देश देते हुए जिम्मेदारियों का निर्वहन करने का निर्देश दिया। कहा कि जिम्मेदारियों में हीलाहवाली करने वालो अफसरों को बख्शा नहीं जाएगा।

उप मुख्यमंत्री कलेक्ट्रेट पहुंचे, उन्होंने स्वास्थ्य सुविधाओं में बेहतरी को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि पीएम गोल्डेन व आयुष्मान कार्ड में सिर्फ कोरमपूर्ति न हो। इसमें गंभीरता से कार्य करते हुए नियमित इसकी मानीटिरिंग की जाए। जिससे लोगों को इसका लाभ मिल सके। सौ शैय्या अस्पताल में बने बर्न यूनिट का संचालन अब तक न होने पर डिप्टी सीएम ने कड़ी नाराजगी व्यक्त की। उन्होंने कहा कि किसी भी हाल में बर्न यूनिट का संचालन दो से तीन दिनों के भीतर सुनिश्चित कर हमें सूचित किया जाए। उन्होंने अल्ट्रासाउंड की समस्या का तत्काल समाधान करने का आश्वासन दिया। वहीं सरकारी अस्पतालों में प्रसव को लेकर प्रयास किये जाने का निर्देश दिया। डिप्टी सीएम ने कहा स्कूलों में बच्चों की शत-प्रतिशत उपस्थिति और स्कूल ड्रेस को लेकर खंड शिक्षा अधिकारी व शिक्षक अपने स्तर से प्रयास करें।

बीएचयू के प्रोफेसर की कार ने मारी सात लोगों को टक्कर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

वाराणसी। काशी हिंदू विवि में एक प्रोफेसर ने अस्पताल एरिया में कार दौड़ाई। उनकी कार बेकाबू हो गई। इससे 7 लोगों को टक्कर लगी। इसमें एक वृद्ध तो धक्का लगते ही बेहोश हो गए। वहां मौजूद लोगों ने कार को घेराबंदी करके रोक ली। पब्लिक ने कार का शीशा तोड़ दिया। प्रोफेसर को बाहर निकालकर उनकी धुनाई कर दी।

इस दौरान प्रॉक्टोरियल बोर्ड के लोगों ने दोनों पक्षों को समझा-बुझाकर शांत कराया। घायलों का ट्रॉमा सेंटर में इलाज चल रहा है। जो कि अब कुछ भी बोलने को तैयार नहीं हैं। गाड़ी चलाने वाले प्रोफेसर का नाम डॉ. त्रियुगी नाथ है। वह साउथ कैंपस में कृषि विज्ञान संस्थान स्थित स्वॉइल साइंस में फैकल्टी हैं। घायलों के परिजनों ने बताया कि उन्हें लगता है कि प्रोफेसर ने ड्रिंक किया था।

चीफ प्रॉक्टर प्रोफेसर अभिमन्यु सिंह ने कहा कि प्रोफेसर और सभी घायलों को इलाज के लिए ट्रॉमा सेंटर भेजवा दिया गया है। घटना की जांच कर दोषियों पर कार्रवाई की जाएगी। कैंपस में तेज गाड़ी चलाने पर रोक है, इस नियम का पालन करना चाहिए। यदि आपकी गाड़ी से कोई घायल हो जाए तो पहला काम उसे इलाज दिलाना होता है।

दो मजदूरों के सिर पर गिरा पत्थर, दर्दनाक मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

महोबा। पहाड़ में काम करते समय दो मजदूरों के सिर पर पत्थर आ गिरे। जानकारी होते ही पहाड़ पर काम कर रहे अन्य मजदूर और अन्य लोग मौके पर पहुंचे, लेकिन तब तक दोनों की मौत हो चुकी थी।

कबरई थाना क्षेत्र के गंज गांव निवासी 27 वर्षीय मधू और इसी गांव का 20 वर्षीय महेंद्र गंज मौजा में स्थित पहाड़ में मजदूरी करते थे। आज सुबह करीब नौ बजे वह पहाड़ में विस्फोट कराने के लिए होल कर रहे थे। उसी दौरान ऊपर से दोनों के ऊपर भारी पत्थर सिर पर आ गिरा। तेज आवाज होते ही कुछ दूरी पर काम कर रहे अन्य मजदूर भाग कर उनके पास पहुंचे और पहाड़ के अन्य कर्मचारियों को भी इसकी सूचना दी। गंभीर रूप से जख्मी हो जाने पर कुछ ही देर में दोनों मजदूरों की मौके पर ही मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

बिना छुट्टी लिए गायब आइएएस अधिकारी अभिषेक सिंह निलंबित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रदेश सरकार ने बिना छुट्टी लिए गायब आइएएस अधिकारी अभिषेक सिंह को निलंबित कर दिया है। अभिषेक सिंह तब चर्चा में आए थे जब गुजरात विधानसभा चुनाव में उन्हें प्रेक्षक की ड्यूटी पर भेजा गया था। बता दें कि आइएएस अधिकारी अभिषेक सिंह की इंटरनेट मीडिया पर कई रील्स भी काफी वायरल हो चुकी हैं।

वहां चुनाव के दौरान उन्होंने अपनी फोटो कार के साथ इंटरनेट मीडिया पर प्रचारित कर दी थी। इसके बाद उन्हें प्रेक्षक पद से हटा दिया गया था। इसके बाद अभिषेक ने उप्र में कार्यभार ग्रहण नहीं किया। बिना छुट्टी गायब रहने को शासन ने गंभीरता से लिया है।

उन्होंने कारण बताओ नोटिस का जवाब भी नहीं दिया था। मुख्यमंत्री के निर्देश पर नियुक्ति विभाग ने उन्हें निलंबित करने का आदेश जारी कर दिया है। निलंबन अवधि में वह राजस्व परिषद से संबद्ध रहेंगे। इससे पहले उन्हें अक्टूबर 2014 में भी निलंबित किया गया था। बता दें कि आइएएस अभिषेक सिंह की पत्नी दुर्गा शक्ति नागपाल भी एक चर्चित आइएएस अधिकारी हैं।

मूल रूप से जौनपुर निवासी अभिषेक सिंह के पिता कृपाशंकर सिंह उत्तर प्रदेश में आइपीएस थे। अब वह सेवानिवृत्त हो चुके हैं। वो नेटफ्लिक्स पर जल्द आने वाले वेब सीरिज दिल्ली क्राइम सीजन-2 में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इस सीरीज का पहला भाग निर्भया कांड पर आधारित था। दूसरा सीजन भी इसी पर केंद्रित माना जा रहा है। जिसमें वह रियल लाइफ आइएएस की भूमिका रीयल लाइफ में भी जी रहे हैं।

धन्यवाद प्रस्ताव पर डिंपल यादव ने भाजपा सरकार पर उठाये सवाल, कहा-

यह कैसा अमृतकाल जहां युवाओं को नौकरी नहीं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सपा सांसद डिंपल यादव ने कहा कि यह कैसा अमृतकाल जहां युवाओं को नौकरी नहीं है। महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न के मामले बढ़ रहे हैं। डिंपल यादव ने राष्ट्रपति के अभिभाषण पर सदन में लाए गए धन्यवाद प्रस्ताव पर चर्चा में भाग लेते हुए कहा कि एक दशक से जिस विश्वास के साथ जनता ने एक स्थिर सरकार चुनी और इस दौरान आत्मनिर्भर, भ्रष्टाचार मुक्त शासन, स्मार्ट सिटी, काला धन की बात हुई लेकिन हिंडनबर्ग की रिपोर्ट आई है। डिंपल यादव ने लोकसभा में कहा कि सरकार को जवाब देना पड़ेगा कि आखिर उस रिपोर्ट की सच्चाई क्या है। डिंपल यादव ने इन मुद्दों को उठाया लेकिन उनके निशाने पर यूपी की योगी सरकार रही। गोरखपुर एम्स, महिला सुरक्षा की बात का हवाला देते हुए उन्होंने योगी सरकार पर निशाना साधा।

डिंपल यादव ने कहा कि 2014 में किसानों में आस जगी कि 2022 में किसानों की आय दोगुनी होगी। किसान विश्वास के साथ देखते रहे लेकिन आज क्या। आज वही किसान निराशाजनक नजरों के साथ देख रहा है। 2 करोड़ नौकरी देने की बात की जा रही थी और मिला क्या अग्निवीर योजना। यह कैसा अमृतकाल है जब युवाओं के पास नौकरी नहीं है। डिंपल यादव ने कहा कि युवाओं के पास नौकरी नहीं और महिला सुरक्षित नहीं है।

महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न के मामले बढ़े हैं इस दौरान डिंपल यादव ने खासकर यूपी का जिक्र किया और कहा कि यहां महिलाओं के खिलाफ यौन उत्पीड़न के मामले बढ़े हैं। डिंपल यादव ने गोरखपुर और रायबरेली के एम्स का विशेषतौर पर जिक्र किया। उन्होंने कहा कि यहां डॉक्टरों की कमी है और स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव है।

डिंपल यादव ने कहा कि यूपी में एक भी कारखाना नहीं लगा। यह दिखाया जा रहा है कि निवेश आ रहा है। एमओयू साइन तो होता है लेकिन एक भी योजना नहीं आती। यह कभी गरीबी नहीं हटा सकते। जब तक युवाओं को रोजगार नहीं दे सकते यह संभव नहीं है। यूपी में नियुक्तियों में सबसे अधिक भेदभाव हो रहा है। डिंपल यादव ने कहा कि जातिगत जनगणना की बात नहीं हो रही है। एससी-एसटी, पिछड़ा वर्ग के कल्याण के लिए जातिगत जनगणना पर बात करनी होगी।

'मानस' विवाद पर संघमित्रा को भूपेंद्र चौधरी की चेतावनी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। रामचरित मानस पर स्वामी प्रसाद मौर्य की विवादित टिप्पणी की आंच अब उनकी बेटी संघमित्रा तक भी पहुंच रही है। उत्तर प्रदेश में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र चौधरी ने विवादित टिप्पणी पर पिता का समर्थन करने वाली संघमित्रा को साफ कह दिया है कि अब उन्हें तय करना होगा कि भविष्य में वह किसके साथ खड़ी होंगी। चौधरी ने कहा कि संघमित्रा बीजेपी की सांसद हैं और 2019 में जनता ने उन्हें सांसद चुना है, हमारी पार्टी का हिस्सा हैं लेकिन अब आगे उन्हें तय करना है कि आगे उनकी लाइन क्या होगी।

आपकी जानकारी के लिए बता दें कि पिछले दिनों जब स्वामी प्रसाद मौर्य अपनी विवादित टिप्पणी के कारण चौतरफा घिरे थे तो उनकी बेटी और भाजपा सांसद संघ मित्रा ने पिता का समर्थन किया था। उन्होंने कहा था कि पिता को पूरे ग्रंथ से नहीं बल्कि कुछ चौपाइंयों पर एतराज है, क्योंकि उन्होंने इसका अध्यन किया है। उन्होंने कहा था कि पिता स्वामी प्रसाद मौर्य की टिप्पणी पर विचार किया जाना चाहिए न कि विवाद खड़ा करना चाहिए।

संघमित्रा ने अपने बयान में कहा था कि यदि किसी को इस लाइन पर संदेह है तो उस पर चर्चा होनी चाहिए। उन्होंने कहा था कि यह विषय विवाद या मीडिया में बैठकर बहस का नहीं बल्कि इस पर विद्वानों को विचार करना चाहिए। ताकि यह साफ हो सके कि चौपाई का वास्तविक अर्थ क्या है। हालांकि बाद में वह इस विवाद पर किनारा करती नजर आईं थी।

बता दें कि स्वामी मौर्य ने पिछले दिनों रामचरित मानस की कुछ पंक्तियों पर आपत्ति दर्ज कराते हुए इसे प्रतिबंधित करने की मांग की थी। उन्होंने कहा कि जो भी विवादित अंश इस ग्रंथ में संकलित हैं, उन्हें निकाला जाना चाहिए। तुलसीदास रचित श्रीरामचरितमानस की एक चौपाई- 'ढोल-गंवार शूद्र पशु नारी, सकल ताड़ना के अधिकारी' का जिक्र करते हुए स्वामी प्रसाद मौर्य ने कहा था कि इस तरह की पुस्तक को जब्त किया जाना चाहिए। महिलाएं सभी वर्ग की हैं, क्या उनकी भावनाएं आहत नहीं हो रहीं हैं।

आम आदमी को फिर लगा झटका
लगातार छठी बार बढ़ा रेपो रेट

मई 2022 से अब तक कुल 2.50 फीसदी तक की हो चुकी है बढ़ोत्तरी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सरकार और वित्त मंत्री भले ही सब कुछ ठीक होने की बात कह रहे हों, मगर आम आदमी पर महंगाई का बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है। इस बीच आज रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया ने आम आदमी को एक और बड़ा झटका दिया है। आरबीआई ने एक बार फिर रेपो रेट में 25 बेसिस प्वाइंट या यूं कहें कि 0.25 फीसदी की बढ़ोत्तरी कर मध्यम वर्ग को फिर तगड़ा झटका दिया है। बता दें कि मई 2022 से अब तक ये लगातार छठी बार है, जब आरबीआई ने रेपो रेट में इजाफा किया हो। इस अवधि में कुल 2.50 फीसदी तक बढ़ चुका है। नई बढ़ोत्तरी के साथ अब रेपो रेट 6.50 फीसदी पर पहुंच गया है। इसके बढ़ने के साथ ही सभी तरह के होम, ऑटो, पर्सनल सब प्रकार के लोन भी महंगे हो गए हैं। इसका मतलब है कि अब लोगों को इन लोन पर अधिक ईएमआई भी भरनी पड़ेगी।

रेपो रेट में बढ़ोत्तरी को लेकर आरबीआई एमपीसी की बैठक 6 फरवरी को शुरू हुई थी। जिसके बाद आज 8 फरवरी को रिजर्व बैंक के गवर्नर शक्तिकांत दास ने नए रेपो रेट का ऐलान किया। आरबीआई गवर्नर ने बताया कि बैठक में मौजूद 6 सदस्यों में से चार ने रेपो रेट में इजाफे का समर्थन किया है। जिसके बाद रेपो रेट में ये बढ़ोत्तरी की गई है। बता दें कि कोरोनाकाल में

.25 प्रतिशत रेपो रेट बढ़ाने का लिया गया फैसला

रेपो रेट 4 फीसदी पर स्थिर था, लेकिन इसके बाद देश में उच्च स्तर पर पहुंची महंगाई को काबू में करने के लिए मई 2022 से अब तक आरबीआई ने एक के बाद एक लगातार छठी बार रेपो रेट बढ़ाने का ऐलान किया है।

बीते साल मई में रेपो रेट में .40 प्रतिशत, जून में .50 प्रतिशत, अगस्त में .50 प्रतिशत, सितंबर में .50 प्रतिशत और दिसंबर में .35 प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई थी। वहीं इस साल भी 2023 की पहली एमपीसी बैठक के बाद एक बार फिर से रेपो रेट को .25 प्रतिशत बढ़ाने का फैसला किया गया है।

रेपो रेट बढ़ने से कैसे बढ़ती है ईएमआई

आरबीआई द्वारा तय किया गया रेपो रेट सीधे तौर पर बैंक लोन को प्रभावित करता है। इसमें कमी आने पर लोन सस्ता हो जाता है और इसमें इजाफा होने के बाद बैंक भी अपना कर्ज महंगा कर देते हैं। इसका असर होम लोन, ऑटो लोन, पर्सनल लोन सभी तरह का लोन पर पड़ता है। इसी क्रम में ईएमआई में भी इजाफा देखने को मिलता है।

प्रोटेस्ट कर रहीं महबूबा मुफ्ती ली गईं हिरासत में

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जम्मू कश्मीर की पूर्व मुख्यमंत्री एवं पीडीपी चीफ महबूबा मुफ्ती को बुधवार को बोट क्लब के पास से हिरासत में ले लिया गया। महबूबा मुफ्ती जम्मू कश्मीर में जारी अतिक्रमण विरोधी अभियान के खिलाफ संसद भवन के पास प्रदर्शन कर रही थीं। बता दें कि महबूबा मुफ्ती ने कश्मीर में चल रहे बुलडोजर की तुलना अफगानिस्तान से की थी।

पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी चीफ महबूबा मुफ्ती ने जम्मू-कश्मीर में चल रहे अतिक्रमण विरोधी अभियान को लेकर भारतीय जनता पार्टी सरकार की तुलना ईस्ट इंडिया कंपनी से की। उन्होंने यह भी कहा कि फिलिस्तीन कश्मीर से बेहतर है।

सोमवार को महबूबा मुफ्ती ने कहा था, बीजेपी ने देश के संविधान को ध्वस्त करने के लिए अपने क्रूर बहुमत को हथियार बना लिया है, उन्होंने असहमति और न्यायपालिका की आवाज को कुचलने के लिए मीडिया को भी हथियार बना लिया है।

पूर्व मुख्यमंत्री मुफ्ती ने आरोप लगाया कि जम्मू-कश्मीर को बीजेपी ने अफगानिस्तान में बदल दिया है। उन्होंने कहा कि बीजेपी अतिक्रमण विरोधी अभियान के तहत गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों के घरों को ध्वस्त करने के लिए बुलडोजर का इस्तेमाल कर रही है।

फोटो: सुमित कुमार

जी-20 सम्मेलन राजधानी लखनऊ में 13 से 15 फरवरी को जी-20 और जीआईएस शिखर सम्मेलन का आयोजन होने जा रहा है। ऐसे में लखनऊ प्रशासन द्वारा शहर को सजाने का काम तेजी से चल रहा है, कई जगहों पर सजावट का काम अंतिम रूप ले चुका है।

केंद्र ने जबरदस्ती रोके फाइजर के कोविड-19 के टीके : केसीआर

» **तेलंगाना के सीएम ने कहा, मेक इन इंडिया बन गया है 'जोक इन इंडिया'**

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। अक्सर भाजपा सरकार पर हमलावर रहने वाले तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव ने एक बार फिर केंद्र सरकार पर हमला बोला है। केसीआर ने इस बार कोविड-19 के टीके फाइजर को लेकर देश की मोदी सरकार पर निशाना साधा है। चंद्रशेखर राव ने आरोप लगाया कि केंद्र सरकार ने फाइजर कंपनी के कोविड-19 टीकों के आयात को जबरदस्ती रोकने के लिए हर संभव कोशिश की, जबकि लोग इन टीकों को लेने के लिए तैयार थे।

तेलंगाना के मुख्यमंत्री ने ये दावा किया कि कई अन्य मुख्यमंत्रियों के

साथ मिलकर भारत में फाइजर के लिए पैरवी की थी, लेकिन मोदी सरकार ने भारत में फाइजर के टीकों को अनुमति नहीं दी।

उन्होंने कहा कि कंपनी को जबरन रोका गया। कई मुख्यमंत्रियों ने पीएमओ और नीति आयोग से भी बात की लेकिन सरकार ने कंपनी को अनुमति नहीं दी। केसीआर ने मेक इन इंडिया को लेकर कहा कि मेक इन इंडिया एक जोक इन इंडिया बन गया है।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक बबिता चतुर्वेदी के लिए 4पीएम आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रधान संपादक- अर्चना दयाल, संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।